पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-VII

Hindi

Specimen copy

Year- 2020-21

Semester- 2

December

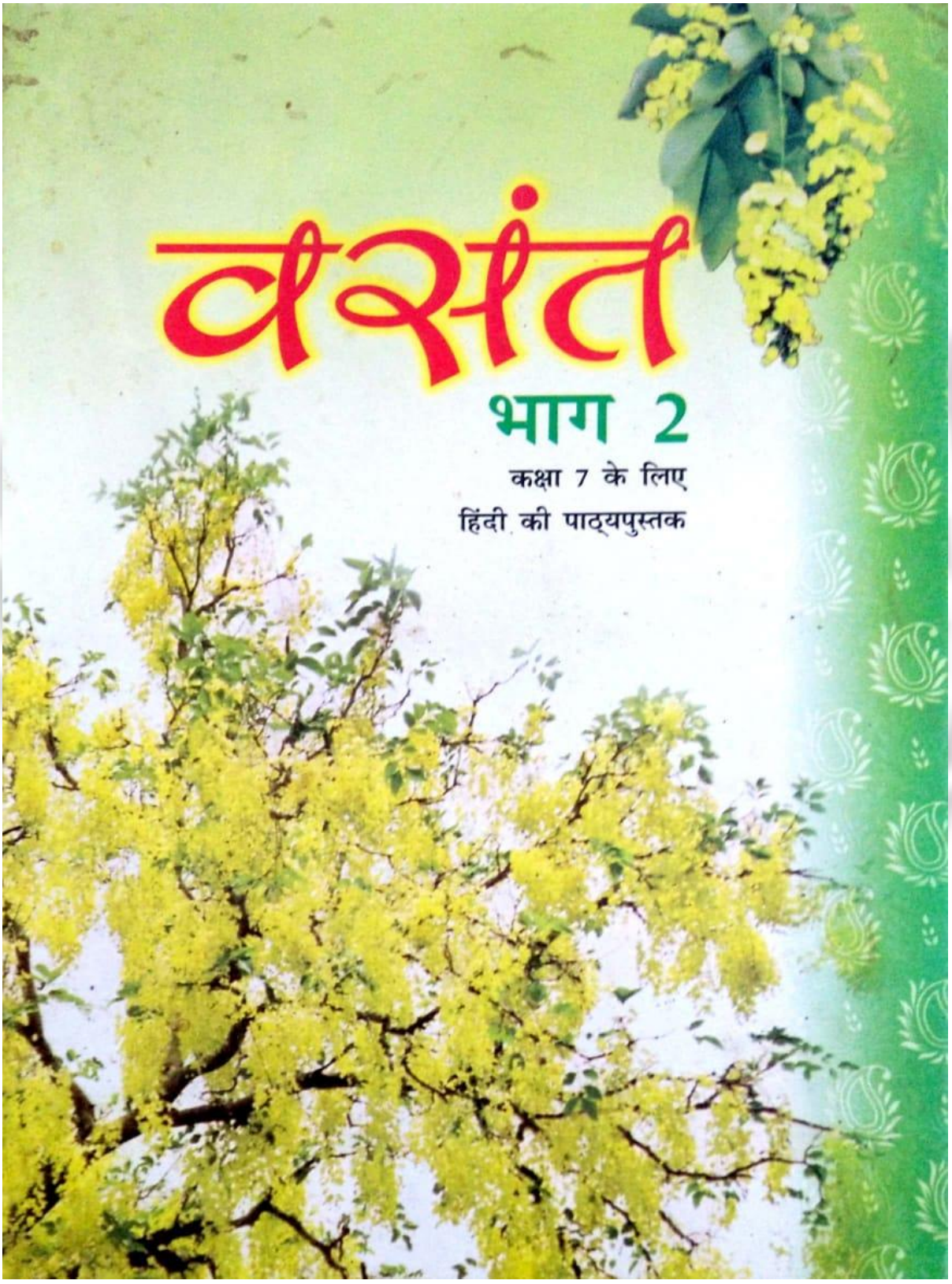
वसंत
भाग 2
कक्षा 7 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

पाठ 17 वीर कुँवर सिंह
(धनराज)

* शब्दार्थ

अभिराम- सुंदर
वयोवृद्ध-बहुत बूढी
रजवाड़े- छोटी-छोटी रियासत
देशव्यापी- देश में फेली
गुप्त ढंग- छुपा कर
जयघोष- जय का नारा
मुक्तिवाहिनी- मुक्ति रूपी नाव
परासत-हारना
कीत्ति-यश
भीषण- भयंकर
दमन- कुचलना
निर्मित- बना हुआ
उलझन- कठिनाई
पतन- विनाश
कुशल- निपुण
शौर्य- बहादुरी
अरिदल- शत्रुओं का समूह
प्रशस्ति- प्रशंसा

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1)वीर कुंवर सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर- वीर कुंवर सिंह का जन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।

2) बाबू कुँवर सिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?
उत्तर- बाबू कुँवर सिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।

3) कुँवर सिंह किस उद्देश्य से आज़मगढ़ पर अधिकार किया था?
उत्तर- वीर कुंवर सिंह आजमगढ़ पर अधिकार कर इलाहाबाद और बनारस पर आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे, वहाँ अंग्रेजों को पराजित कर अंततः उनका लक्ष्य जगदीशपुर पर अधिकार करना था।

4) सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झाँसी की रानी' में किन-किन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम आए हैं?
उत्तर- झाँसी की रानी' कविता में रानी लक्ष्मीबाई के अलावे नाना धुंधूपंत, तात्या टोपे, अज़ीमुल्ला खान, अहमद शाह मौलवी तथा वीर कुंवर सिंह के नाम आए हैं।

5) सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?
उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगल पांडे ने मार्च 1857 में बैरकपुर सैनिक छावनी से की थी।

* लघु उत्तरीय प्रश्न

1) 1857 की क्रांति की क्या उपलब्धियाँ थीं?
उत्तर- 1857 की क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि यह आंदोलन देश को आजादी पाने की दिशा में एक प्रथम चरण था। इस क्रांति के परिणामस्वरूप लोगों की आँखें खुल गईं और उनमें राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता की पृष्ठभूमि का विकास हुआ। इस आंदोलन की उपलब्धि सांप्रदायिक सौहार्द की भावना के विकास के रूप में हुआ। हिंदू-मुस्लिम एकता बढ़ी। राष्ट्रीय भावना लोगों में जाग्रत हुई।

2)मंगल पांडे के बलिदान के बाद स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को कैसे आगे बढ़ाया?
उत्तर- मंगल पांडे के बलिदान के बाद मेरठ के आस-पास के स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को आगे बढ़ाया और

दिल्ली पर विजय प्राप्त की। 14 मई को दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र को अपना सम्राट घोषित किया।

3) आज़मगढ़ की ओर जाने का वीर कुंवर सिंह का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना। उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। उन्होंने अंग्रेजों को दो बार हराया। वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताका फहराते हुए जगदीशपुर तक पहुंच गए।

4) वीर कुंवर सिंह ने अपना बायाँ हाथ गंगा मैया को समर्पित क्यों किया?

उत्तर- जब कुँवर सिंह शिवराजपुर नामक स्थान से सेनाओं को गंगा पार करवा रहे थे तो अंतिम नाव पर वे स्वयं बैठे थे। उसी समय उनकी खोज में अंग्रेज सेनापति डगलस आया। उसने गोलियाँ बरसानी शुरू कर दी। उसी समय दूसरे तट से अंग्रेजों की एक गोली उनके बाएँ हाथ में लगी। शरीर में जहर फैलने के डर से कुँवर सिंह ने तत्काल अपनी तलवार निकाली और हाथ काटकर गंगा में भेंट कर दिया।

*** दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1) 1857 के आंदोलन में वीर कुंवर सिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीर कुंवर सिंह का 1857 के आंदोलन में निम्नलिखित योगदान है कुँवर सिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवर सिंह की वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई। इसके अलावे इन्होंने बनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुर और आरा पर विजय प्राप्त की। जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम से मिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर-दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आज़मगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनः आधिपत्य जमा लिया। इस प्रकार उन्होंने मरते दम तक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

व्याकरण

5) अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो वहाँ पर अपादान कारक होता है।

हाथ से छड़ी गिर गई।
पेड़ से आम गिरा।
चूहा बिल से बाहर निकला।

6)संबंध कारक :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग, वचन के अनुसार बदल जाती हैं।

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।

(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।
(iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।

7)अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का ज्ञान होता है, उसे अधिकरण कारक कहते है।
दूसरे शब्दों में – क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरण कारक कहते है।
अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।
जैसे -
(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।
(iv) फ्रिज में सेब रखा है।

8)संबोधन कारक

जिन शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने में किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते है।
दूसरे शब्दों में – संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है, जैसे -
(i) हे ईश्वर! रक्षा करो।
(ii) अरे! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे राम! यह क्या हो गया।

क्रिया–विशेषण

- जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं। क्रिया विशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते हैं।

१-काल वाचक क्रिया विशेषण
२-स्थान वाचक क्रिया विशेषण
३-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
४-रीति वाचक क्रिया विशेषण

1) काल वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

क्रिया विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात हो तो वह काल वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। इसमें बहुदा ये शब्द प्रयोग में आते हैं- यदा, कदा,जब, तब, हमेशा, तभी, तत्काल, निरंतर, शीघ्र, पूर्व, बाद, पीछे, घड़ी-घड़ी, अब, तत्पश्चात, कल, कई बार, अभी, फिर कभी आदि।

काल वाचक क्रिया विशेषण

१-मैं अभी आ रहा हूं।
२-फिर कभी चलेंगे।
३-पानी निरंतर बह रहा है।

2)स्थान वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जिस क्रिया विशेषण शब्द द्वारा क्रिया के होने के स्थान का बोध हो वह स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाता है। इसमें ज्यादातर यह शब्द प्रयोग में आते हैं भीतर, बाहर, अंदर, यहां, वहां, किधर, इधर-उधर, कहां, जहां, दूर, अन्यत्र, इस ओर, उस ओर, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे आदि।

स्थान वाचक क्रिया विशेषण

१-भीतर जाकर बैठिए
२-यहां से चले जाइए।
३-किधर जा रहे हो

3)परिमाणवाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं वह परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। इसमें बहुदा थोड़ा-थोड़ा, अत्यंत, अधिक, अल्प, बहुत, कुछ, पर्याप्त, तक, कम, न्यून, बूंद बूंद, स्वल्प, केवल आदि शब्द प्रयोग में आते हैं।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

१-थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए
२-वह अधिक बोलता है

4)रीति वाचक क्रिया विशेषण की परिभाषा-

जिन शब्दों के द्वारा क्रिया के संपन्न होने की रीति का बोध होता है वे रीती वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।
इनमें झटपट, आप ही आप, ध्यान पूर्वक ,धड़ाधड़, यथा, ठीक, सचमुच, अवश्य, वास्तव में, निस्संदेह, बेशक, शायद, संभव है, कदाचित, बहुत करके, ठीक, सच, जी, जरूर, आते हो, इसलिए, क्योंकि, नहीं, कभी नहीं, कदापि नहीं आदि शब्द आते हैं।

रीति वाचक क्रिया विशेषण

१-दिन जल्दी जल्दी ढलता है।
२-संभव है कि वह आए
३-धीरे-धीरे चलिए

लेखन-विभाग

*** गंदगी की सूचना देते हुए नगर निगम अधिकारी को प्रत्र।**

B-4/13 अंकुर विहार, लोनी
गाजियाबाद।
दिनांक-16 अगस्त
सेवा में
नगर निगम अधिकारी
लोनी क्षेत्र, गाजियाबाद।
विषय-हमारे क्षेत्र में फैली गंदगी की सूचना हेतु पत्र।
महोदय
मैं अंकुर तथा आसपास के इलाकों में फैली गंदगी तथा सफ़ाई कर्मचारियों की अकर्मण्यता के विषय में आपको सूचित करना चाहता हूँ।
यहाँ जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हैं तथा गलियों में यहाँ-वहाँ कूड़ा फैला है। सफ़ाई कर्मचारी सप्ताह में एक बार भी सफ़ाई नहीं करते तथा नगर निगम की गाड़ियाँ महीनों तक दिखाई नहीं पड़तीं। चारों तरफ़ मक्खी, मच्छर तथा बदबू का साम्राज्य है।
आशा है आप इस विषय में अवश्य कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
ओजस्व तिवारी।

*** चित्र वर्णन कीजिए।**

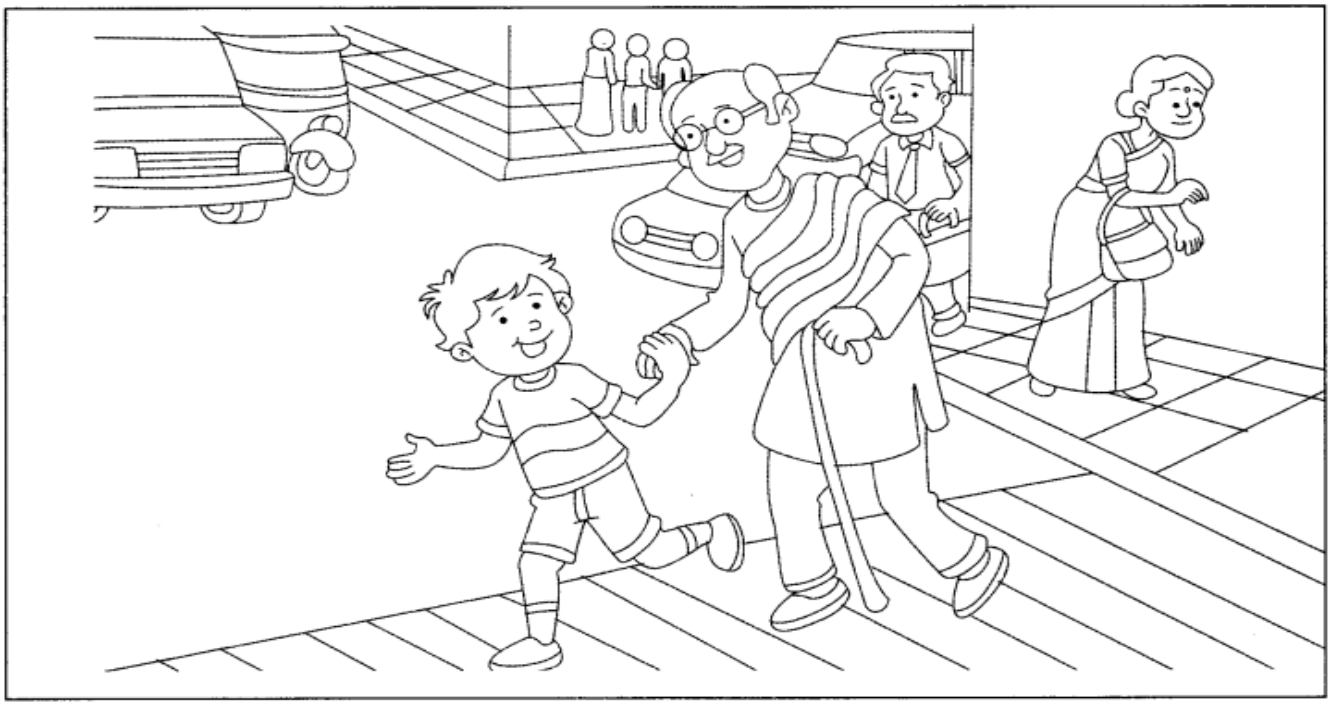

यह किसी महानगर के व्यस्त चौराहे का दृश्य है। यहाँ वाहनों की आवाजाही के कारण वृद्धों के लिए सड़क पार करना टेढ़ी खीर बन गया है। बत्ती लाल होने पर एक बालक किसी वृद्ध को सड़क पार करा रहा है। यह बालक अच्छे संस्कार वाला है।

***गतिविधि- वीर कवरसिंह का चित्र बनाओ**

बाल–महाभारत

पाठ 32–37

प्रश्न-1 द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?

उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।

प्रश्न-2 तेरहवें दिन अर्जुन को युद्ध के लिए किसने ललकारा?

उत्तर- तेरहवें दिन संशप्तकों (त्रिगर्ता) ने अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा।

प्रश्न-3 तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ किस दिशा की ओर चले गए?

उत्तर – तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ दक्षिण दिशा की ओर चले गए।

प्रश्न-4 द्रोण ने कर्ण को अभिमन्यु पर हमला करने का कौन सा उपाय बताया?

उत्तर – द्रोण ने कर्ण के पास आकर कहा-

"इसका कवच भेदा नहीं जा सकता। ठीक से निशाना साधकर इसके रथ के घोड़ों की रास काट डालो और पीछे की ओर से इस पर अस्त्र चलाओ।"

प्रश्न-5 अभिमन्यु ने युधिष्ठिर से चक्रव्यूह भेदने के बारे में क्या कहा?

उत्तर - अभिमन्यु ने युधिष्ठिर से कहा-"महाराज, इस चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो मुझे आता है, पर प्रवेश करने के बाद कहीं कोई संकट आ गया तो व्यूह से बाहर निकलना मुझे याद नहीं है।"

प्रश्न-6 दुर्योधन के पुत्र लक्ष्मण की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर – अभिमन्यु की बाण-वर्षा से व्याकुल होकर जब सभी योद्धा पीछे हटने लगे, तो वीर लक्ष्मण अकेला जाकर अभिमन्यु से भिड़ गया। वह वीर बालक भाले की चोट से तत्काल मृत होकर गिर पड़ा।

प्रश्न-7 युधिष्ठिर ने अभिमन्यु को किस प्रकार मदद करने का विश्वास दिलाया?

उत्तर – युधिष्ठिर ने कहा-"बेटा! व्यूह को तोड़कर एक बार तुम भीतर प्रवेश कर लो; फिर तो जिधर से तुम आगे बढ़ोगे, उधर से ही हम तुम्हारे पीछे-पीछे चले आएँगे और तुम्हारी मदद को तैयार रहेंगे।"

प्रश्न-8 जयद्रथ की रक्षा के लिए किन्हें नियुक्त किया गया?

उत्तर - जयद्रथ के रक्षा के लिए भूरिश्रवा, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन आदि महारथियों को नियुक्त किया गया।

प्रश्न-9 अभिमन्यु की मृत्यु के बाद अर्जुन ने क्या प्रतिज्ञा ली?

उत्तर – अभिमन्यु की मृत्यु के बाद अर्जुन ने प्रतिज्ञा ली कि "जिसके कारण मेरे प्रिय पुत्र की मृत्यु हुई है, उस जयद्रथ का मैं कल सूर्यास्त होने से पहले वध करके रहूँगा।"

प्रश्न-10 श्रीकृष्ण पर किसने प्रहार किया और उसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर – श्रुतायुध ने गदा उठाकर श्रीकृष्ण पर प्रहार किया। परंतु नि:शस्त्र और युद्ध में शरीक न होनेवाले श्रीकृष्ण पर फेंककर मारी गई गदा श्रुतायुध को ही जा लगी और वह मृत होकर गिर पड़ा।

प्रश्न-11 जब युधिष्ठिर को पता चला कि सात्यकि पर संकट आया हुआ है, तब उन्होंने क्या किया?

उत्तर – जब युधिष्ठिर को पता चला कि सात्यकि पर संकट आया हुआ है, तब वह अपने आसपास

के वीरों से बोले-
"कुशल योद्धा, नरोत्तम और सच्चे वीर सात्यकि आचार्य द्रोण के बाणों से बहुत ही पीड़ित हो रहे हैं। चलो, हम लोग उधर चलकर उस वीर महारथी की सहायता करें।"

प्रश्न-12 युधिष्ठिर ने सात्यकि के प्रसंग में धृष्टद्युम्न से क्या कहा?

उत्तर- युधिष्ठिर धृष्टद्युम्न से बोले–"द्रुपद-कुमार! आपको अभी जाकर द्रोणाचार्य पर आक्रमण करना चाहिए, नहीं तो डर है कि कहीं आचार्य के हाथों सात्यकि का वध न हो जाए।"

प्रश्न-13 धृष्टद्युम्न ने भीमसेन को क्या विश्वास दिलाया?

उत्तर - धृष्टद्युम्न ने कहा-"तुम किसी प्रकार का चिंता न करो और निश्चित होकर जाओ। विश्वास रखो कि द्रोण मेरा वध किए बिना युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकेंगे।"

प्रश्न-14 अर्जुन ने अपने प्रतिज्ञा के बारे में क्या बताया?

उत्तर – अर्जुन बोला-"वीरो! तुम सब मेरी प्रतिज्ञा जानते हो। मेरे बाणों की पहुँच तक अपने किसी भी मित्र या साथी का शत्रु के हाथों वध न होने देने का प्रण मैंने कर रखा है। इसलिए सात्यकि की रक्षा करना मेरा धर्म था।"

प्रश्न-15भूरिश्रवा की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर- अर्जुन की बातें सुनकर भूरिश्रवा ने भी शांति से सिर नवाया और जमीन पर टेक दिया। इन बातों में कोई दो घड़ी का समय बीत गया था। सब लोगों के मना करते हुए भी सात्यकि ने भूरिश्रवा का सिर धड़ से अलग कर दिया।

प्रश्न-16 द्रोणाचार्य को किसने मारा?

उत्तर – द्रोणाचार्य को धृष्टद्युम्न ने मारा।

प्रश्न-17 जयद्रथ के वध के संबंध में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से क्या कहा?

उत्तर - श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-"अर्जुन! जयद्रथ सूर्य की तरफ़ देखने में लगा है और मन में समझ रहा है कि सूर्य डूब गया। परंतु अभी तो सूर्य डूबा नहीं है। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का तुम्हारे लिए यही अवसर है।"

प्रश्न-18 आचार्य द्रोण की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर – उनका पुत्र अश्वत्थामा मारा गया। यह सुनकर वह विचलित हो गए। उन्होंने युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर के मुँह से यह सुनते ही चारों ओर हाहाकार मच गया और इसी हाहाकार के बीच धृष्टद्युम्न ने ध्यानमग्न आचार्य की गरदन पर खड्ग से जोर का वार किया। आचार्य द्रोण का सिर तत्काल ही धड़ से अलग होकर गिर पड़ा और द्रोण की मृत्यु हो गई ।

प्रश्न-19 कृपाचार्य ने दुर्योधन को सांत्वना देते हुए क्या कहा?

उत्तर – कृपाचार्य ने दुर्योधन को सांत्वना देते हुए कहा-"राजन्! अब तुम्हारा कर्तव्य यही है कि पांडवों से किसी प्रकार संधि कर लो। अब युद्ध बंद करना ही श्रेयस्कर होगा।"

प्रश्न-20 दुःशासन की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर- अर्जुन की रक्षा करता हुआ भीम, अपने रथ पर उसके पीछे-पीछे चला और दोनों एक साथ कर्ण पर टूट पड़े। जब दुःशासन ने यह देखा, तो उसने भीम पर बाणों की वर्षा कर दी। उसको भीम ने एक ही धक्के में जमीन पर गिरा दिया और उसका एक-एक अंग तोड़-मरोड़ डाला।

प्रश्न-21 जलाशय में छिपे दुर्योधन को युधिष्ठिर ने कैसे चुनौती दी?

उत्तर – युधिष्ठिर ने कहा-"दुर्योधन! अपने कुटुंब और वंश का नाश कराने के बाद अब पानी में छिपकर प्राण बचाना चाहते हो?"

प्रश्न-22 मद्रराज शल्य का वध किसने किया?

उत्तर – मद्रराज शल्य का वध युधिष्ठिर ने किया।

प्रश्न-23 शकुनि का वध किसने किया?

उत्तर – शकुनि का वध सहदेव ने किया।

प्रश्न-24 कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति किसे नियुक्त किया गया?

उत्तर – कर्ण के बाद कौरव - सेना का सेनापति मद्रराज शल्य को नियुक्त किया गया।

प्रश्न-25 द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने किसको सेनापति मनोनीत किया?

उत्तर – द्रोण के मारे जाने पर कौरव-पक्ष के राजाओं ने कर्ण को सेनापति मनोनीत किया।

प्रश्न -26 पांडवों का एक मात्र चिन्ह कौन रह गया था?

उत्तर – पांडवों का एक मात्र चिन्ह उत्तरा का पुत्र परीक्षित रह गया था।

प्रश्न-27 परीक्षित किसका पुत्र था?

उत्तर – परीक्षित उत्तरा और अभिमन्यु का पुत्र था।

प्रश्न-28 मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए दुर्योधन ने कौरव-सेना का सेनापति किसे बनाया?

उत्तर – मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए दुर्योधन ने आसपास खड़े हुए लोगों से कहकर अश्वत्थामा को कौरव-सेना का विधिवत् सेनापति बनाया।

प्रश्न-29 शोक-विह्वल द्रौपदी ने युधिष्ठिर से क्या कहा?

उत्तर – युधिष्ठिर के पास आकर द्रौपदी ने कहा -"क्या इस पापी अश्वत्थामा से बदला लेनेवाला हमारे यहाँ कोई नहीं रहा है?"

प्रश्न-30 मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए दुर्योधन के सामने अश्वत्थामा ने क्या प्रतिज्ञा की?

उत्तर – मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए दुर्योधन के सामने अश्वत्थामा ने दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा की कि वह आज ही रात में पांडवों को नष्ट करके रहेगा।

प्रश्न-31 अश्वथामा कौन था और उसने पांडवों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा क्यों ली?

उत्तर – अश्वथामा द्रोणाचार्य का पुत्र था। उसने पांडवों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा इसलिए ली थी क्योंकि पांडवों ने कुचक्र रच कर उसके पिता द्रोणाचार्य का वध किया था।

पाठ 19 आश्रम का अनुमति व्यय
(मोहनदास करमचंद गाँधी)

* शब्दार्थ

अतिथि- मेहमान
सहपरिवार- परिवार सहित
पुस्तकालय- पुसतकों को रखने का स्थान
विभिन्न- अलग-अलग
अनुमति व्यय- अनुमान में लगाया गया खर्च
मोंगरा- लकड़ी का बड़ा हथौडा
सिवा- अलावा
चौका- रसोई

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1) गांधी जी कौन-सा आश्रम बना रहे थे?
उत्तर- गांधी जी अहमदाबाद में साबरमती आश्रम बना रहे थे।

2)आश्रम में शुरुआत में कितने लोग थे?
उत्तर- आश्रम में शुरुआत में चालीस लोग थे।

3)पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें रखी जाती थीं?
उत्तर- पुस्तकालय में तीन हजार पुस्तकें रखी जाती थीं।

4)शिक्षण के सामान में कितने हथकरघों की आवश्यकता होगी?
उत्तर- पाँच-छह देशी हथकरघों की आवश्यकता होगी।

5)गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब की थी?
उत्तर- गांधी जी ने आश्रम की स्थापना दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद की थी।

* लघु उत्तरीय

1) गांधी जी ने आश्रम की स्थापना कब करनी चाही?
उत्तर- गांधी ने सन् 1915 में, जब वे दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो अहमदाबाद में आश्रम बनाने की योजना बनाई।

2)गांधी जी को आश्रम के लिए कितने स्थान की ज़रूरत थी और क्यों?
उत्तर- साबरमती आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने, इनमें हर महीने दस अतिथियों के आने की संभावना, जिनमें तीन या पाँच सपरिवार आने की उम्मीद थी। अतः आश्रम में तीन रसोईघर तथा रहने के मकान के लिए 50,000 फुट क्षेत्रफल में बने मकान की आवश्यकता थी। इसके अलावे-खेती के लिए पाँच एकड़ जमीन की ज़रूरत थी, क्योंकि इतने लोगों के भोजन का सामान खरीदना कठिन था।

* दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) गांधी जी ने आश्रम के अनुमानित खर्च का ब्यौरा क्यों तैयार किया?
उत्तर- गांधी जी द्वारा लिखे गए पाठ 'आश्रम का अनुमानित व्यय' से हमें सीख मिलती है कि यदि हम कोई भी कार्य करना चाहें तो सोच-समझकर पहले ब्यौरा बना लेना चाहिए ताकि उसके अनुमानित खर्च को भी जाना जा सके तथा इस हिसाब से आगे बढ़ने का रास्ता भी साफ़ दिखाई देने लगता है। गांधी जी एक ऐसे आश्रम की स्थापना कर रहे थे। इसके लिए स्थान की ज़रूरत थी, आवश्यक वस्तुओं, पुस्तकों, भोजन की व्यवस्था करने की जरूरत थी। वहाँ सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन की योजनाएँ तैयार करनी थीं। वह

आश्रम एक दो दिन के लिए नहीं, लंबे समय के लिए बनाया जा रहा था। अतः स्थायी व्यवस्था के लिए गांधी ने खर्च का लेखा-जोखा तैयार दिया।

2) गांधी जी के अनुसार आश्रम में कौन-कौन से खर्च थे? वह उसे कहाँ से जुटाना चाहते थे?

उत्तर- गांधी जी के अनुसार यदि अन्य खर्च अहमदाबाद उठा ले, तो वह खाने का खर्च जुटा लेंगे। उनके अनुसार आश्रम के मद में निम्नलिखित खर्च थे।

1. मकान और जमीन का किराया।
2. किताबों की अलमारियों का खर्च ।
3. बढ़ई के औजार।।
4. मोची के औजार।
5. चौके के सामान।
6. एक बैलगाड़ी या घोडागाड़ी।
7. एक वर्ष में भोजन का खर्च- 6000 रु०।।

व्याकरण

*** अलंकार**

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है- अलम- कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है "आभूषण।"मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

*** अलंकार के भेद**

अलंकार के मुख्यतः दो भेद होते हैं :

1) शब्दालंकार 2) अर्थालंकार

1) शब्दालंकार

जो अलंकार शब्दों के माध्यम से काव्यों को अलंकृत करते हैं, वे शब्दालंकार कहलाते हैं। यानि किसी काव्य में कोई विशेष शब्द रखने से सौन्दर्य आए और कोई पर्यायवाची शब्द रखने से लुप्त हो जाये तो यह शब्दालंकार कहलाता है।

"भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही"

इस उदाहरण में विशिष्ट व्यंजनों के प्रयोग से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हुआ है। यदि "भूमि" के बजाय उसका पर्यायवाची "पृथ्वी", "भूप" के बजाय उसका पर्यायवाची "राजा" रख दे तो काव्य का सारा चमत्कार खत्म हो जाएगा। इस काव्य पंक्ति में उदाहरण के कारण सौंदर्य है। अतः इसमें शब्दालंकार है।

2) अर्थालंकार

जब किसी वाक्य का सौन्दर्य उसके अर्थ पर आधारित होता है तब यह अर्थालंकार के अंतर्गत आता है ।

उदाहरण के लिए-

"चट्टान जैसे भारी स्वर"

इस उदाहरण में चट्टान जैसे के अर्थ के कारण चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यदि इसके स्थान पर "शीला" जैसे शब्द रख दिए जाएं तो भी अर्थ में अधिक अंतर नहीं आएगा। इसलिए इस काव्य पंक्ति में अर्थालंकार का प्रयोग हुआ है।

लेखन-बोध

* महात्मा गांधी पर अनुच्छेद

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात राज्य के काठियावाड़ प्रदेश में स्थित पोरबन्दर शहर में 2 अक्टूबर, 1869 ई॰ को हुआ था । उनके पिता राजकोट रियासत के दीवान के । उनकी माता बड़ी सज्जन और धार्मिक विचारों वाली महिला थी । उन्होंने बचपन से ही गांधी को धार्मिक कथायें सुना-सुना कर उन्हें सात्विक प्रवृति बना दिया था ।सात वर्ष की आयु में उन्हे स्कूल भेजा गया । स्कूल की पढ़ाई में वे औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे । लेकिन वे अपना कक्षा मे ठीक समय पर नियमित रूप से पहुंचते थे और पाठ को मन लगाकर पढ़ते थे । मैट्रिक परीक्षा पास करने के बाद वै कॉलेज में पढ़े और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गये । कुछ समय के बाद सौभाग्य से उन्हें एक बड़ा भारतीय व्यापारी मिला, जिसका दक्षिण अफ्रीका में बड़ा कारोबार था । उसे अपनी किसी उलझे मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका में एक अच्छे वकील की जरूरत थी । उसने गांधी जी काफी बड़ी फीस देकर इस काम को करने को तैयार कर लिया । उसने गाँधी जी को दक्षिण अफ्रीका बुला लिया ।दक्षिण अफ्रीका पहुंच कर उन्होंने भारत मूल के लोगो को बड़ी दयनीय अवस्था में देखा । उन्होंने उनकी दशा सुधारने का फैसला कर लिया और भारतीयों को उनके अधिकारों का बोध कराया । उन्होने उनमे जागृति लाकर उन्हें संगठित किया ।उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए जिस कांग्रेस की स्थापना की, आज भी वह वहां की प्रमुख पार्टी है । गांधी जी और उनके साथियों को कैद करके सजायें दी गई, लेकिन उन्होने अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी । इसके साथ ही उन्होंने काग्रेस पार्टी के सामने-समाज सुधार और हिन्दू-मुस्लिम एकता जैसे रचनात्मक कार्यो को सुझाया । छुआछूत के खिलाफ उन्होंने जोरदार आवाज उठाई और अछूतो को 'हरिजन' जैसा आदरणीय सबोधन दिया । हिन्दू-मुस्लिम एकता की रक्षा पर तोउन्होने अपनी जान तक दे दी । ब्रिटिश सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को दबाने का भरसक प्रयास किया । कई बार उन्होने गाँधी जी तथा अन्य भारतीय नेताओं को पकड कर जेल में डाल दिया । लेकिन उन्होंने भारत को स्वतन्त्रता दिलवा दी । 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ । गांधी जी की अकस्मात हत्या कर दी गई । एक पागल नौजवान ने उन्हें प्रार्थना-सभा में गोलियो से भून दिया । वह गांधी जी के विचारों का घोर विरोधी था । उनकी हत्या 30 जनवरी, 1948 को हुई ।

*गतिविधि- गांधीजी का चित्र बनाओ।

पाठ 20 विप्लव गायन
(बालकृष्ण शर्मा "नवीन")

***शब्दार्थ**

उथल-पुथल- हलचल
हिलोर-लहर
मिजराव- वीणा के तार
कंठ -गला
मारक गीत- विनाश का गीत
राज- रहस्य
फणि- शेषनाग
क्षुब्ध- क्रोधित
दग्ध- जलना
ज्वलंत- चमकदार
अंतर्तर-हृदय
व्यापत- फैला हुआ
कालकूट- जहर

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1)यह कविता किस वाद से प्रभावित है?
उत्तर- यह कविता प्रगतिवाद से प्रभावित है।

2) कवि अन्य कवियों से क्या आह्वान करता है?
उत्तर- क्रांतिकारी गीत की रचना के लिए आह्वान करता है।

3)क्रांति लाने के लिए कवि किसका सहारा लेता है?
उत्तर- क्रांति लाने के लिए कवि गीत का सहारा लेता है।

4) कवि के कंठ से निकले गीत का क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर- कवि के कंठ से निकले गीत जीर्ण-शीर्ण विचारधाराओं और रुढ़िवादी विचारों का नाश हो जाएगा।

* लघु उत्तरीय प्रश्न

1)कवि कैसी तान सुनाना चाहते हैं?
उत्तर- कवि ऐसी तान सुनाना चाहते हैं जिससे चारों तरफ़ हलचल मच जाए।

2) कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?
उत्तर- कवि का मानना है कि विप्लव गान द्वारा ही वह लोगों को समाज के नवनिर्माण के लिए जाग्रत कर सकता है, क्योंकि सुंदर राष्ट्र की नींव पुराने, गले-सड़े रीति-रिवाजों व रूढ़िवादी विचारों पर नहीं रखा जा सकता।

3) कविता में कालकूट फणि की चिंतामणि शब्दों का अर्थ क्या है?
उत्तर- विष से परिपूर्ण शेषनाग को अपनी सबसे प्रिय मणि की चिंता हरदम रहती है, वैसे ही कवि चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य के मन में नवनिर्माण की चिंता जाग्रत कर सके।

* दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) कवि के अनुसार जीवन का रहस्य क्या है?
उत्तर- कवि के अनुसार, कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है। इस कविता का भाव है जीवन का रहस्य है। विकास और गतिशीलता में रुकावट पैदा करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके नया निर्माण करना। नव-निर्माण के लिए कवि विध्वंस और महानाश को आवश्यक मानता है। यह विनाश सदियों से चली आ रही रुढ़िवादी मानसिकता, जड़ता तथा अंधविश्वास को काटकर दूर फेंक देगा। सारी रुकावट समाप्त कर नए सृजन तथा नए राष्ट्र को निर्माण का रास्ता साफ़ हो जाएगा। इसके लिए कवि द्वारा एक क्रांति की चिंगारी जलाने की जरूरत है।

व्याकरण

* **वाक्य-** दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं।

वाक्य के प्रकार (भेद)

अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार

1) विधानवाचक वाक्य (Affirmative sentence)
जिस वाक्य से क्रिया **करने या होने का बोध** हो , उसे विधानवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- रमा खेल रही है।

2) निषेधवाचक वाक्य (Negative sentence)
जिस वाक्य में क्रिया **न करने या न होने का बोध** हो , उसे निषेधवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- बाहर जाना **मना** है।

3) प्रश्नवाचक वाक्य (Interrogative sentence)
जिस वाक्य में **प्रश्न का बोध** हो , उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- तुम **क्या** कर रहे हो ?

4) संदेहवाचक वाक्य (Skeptical sentence)
जिस वाक्य में **संदेह या संभावना का बोध** हो , उसे संदेहवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- शायद आज बारिश होगी।

5) संकेतवाचक वाक्य (Indicative sentence)
जिस वाक्य में **एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत** हो , उसे संकेतवाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- यदि बारिश होती **तो** पानी की कमी न होती।

6) इच्छावाचक वाक्य (Optative sentence)
जिस वाक्य में **इच्छा , शुभकामना , आशीर्वाद , आशा आदि के भाव** प्रकट हों , उसे इच्छावाचक वाक्य कहते है।
जैसे :- मुझे आज बाहर जाने का मन हो रहा है।
आप अच्छे अंको से पास हो।
सदा कल्याण हो।
अच्छे के लिए आशा !

7) आज्ञावाचक वाक्य (Imperative sentence)

जिस वाक्य में **आज्ञा , उपदेश , आदेश , अनुमति या प्रार्थना आदि के भाव** प्रकट हो , उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- तुम बाहर जाओ। (आज्ञा-order का भाव)
निरंतर कोशिश करने वाले कभी हारते नहीं।
तुम खेलने के लिए बाहर जा सकते हो।
हे प्रभु ! मेरा विश्वास कमज़ोर न हो।

8) विस्मयादिवाचक वाक्य (Exclamatory sentence)

जिस वाक्य में **विस्मय , हर्ष , क्रोध , घृणा आदि के भाव** प्रकट हों , उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

जैसे :- अरे ! तुम कितनी सुंदर लग रही हो।
धन्य – धन्य ! तुम पहले नंबर से पास हो गए।
बस करो ! तुम्हें कुछ समज में नहीं आता ?

रचना के आधार पर वाक्य प्रकार

1) सरल वाक्य (simple sentence)

जिस वाक्य में **एक उद्देश्य और एक विधेय** होता है , उसे सरल वाक्य कहते है।

जैसे :- सोहन खेलता है। ('सोहन' उद्देश्य है और 'खेलता है ' विधेय है।)

2) संयुक्त वाक्य (compound sentence)

जिस में **दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य** होते है और वे 'या' , 'किंतु' , 'और' जैसे समुच्चबोधकों(conjunctions) से जुड़े होते हैं , उसे संयुक्त वाक्य कहते है।

जैसे :- शिला बहादुर है और चतुर भी है। ('शिला बहादुर है।' , 'चतुर भी है।' दोनों स्वतंत्र उपवाक्य है। 'और ' समुच्चयबोधक अव्यय है।)

3) मिश्र वाक्य (complex sentence)

जिस वाक्य में **उपवाक्य मुख्य उपवाक्य पर आश्रित** होता है और वे 'कि ' , ' तथापि ' , ' इसलिए ' जैसे समुच्चयबोधकों(conjunctions) से जुड़े होते है , उसे मिश्र वाक्य कहते है।

जैसे :- मैंने देखा कि पर्दे के पीछे कोई छिपा था। ('मैंने देखा' मुख्य उपवाक्य है और 'पर्दे के पीछे कोई छिपा था।' आश्रित उपवाक्य है। 'कि ' समुच्चयबोधक अव्यय है।)

लेखन–बोध

*** दिनचया–लेखन**

परिक्षा मे कम अंक लाने पर अपने गुण-दोष की समीक्षा।

महेशवाड़ा

28 मार्च, 2018

आज वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ। इस बार फिर मैं द्वितीय स्थान पर ही आई। मुझे ऐसा लगता था कि इस बार मैं प्रथम स्थान प्राप्त करूँगी। अब मेरी समझ में आ रहा है कि हर बार मुझे दूसरा स्थान ही क्यों मिलता रहा है। मुझे स्मरण है कि मैंने चार-पाँच प्रश्नों के उत्तर कई बार काटकर लिखे हैं। ऑभर राइटिंग भी हुई है। मेरी लिखावट भी साफ-सुथरी नहीं होती है। एक बात और है, मुझमे आत्मविश्वास की जबर्दस्त कमी है। मैं कक्षा में भी चुपचाप बैठी रहती हूँ। यदि यही स्थिति रही तो निस्सन्देह, मैं हर जगह मात खा खा जाऊँगी। मुझे आत्मविश्वास जगाना ही होगा।
ऋचा

*** चित्र वर्णन कीजिए।**

यह चित्र 'स्वच्छ भारत अभियान' से संबंधित है। लोग अपने आसपास साफ़-सफ़ाई रखने के लिए हाथों में झाड़ उठा लिया है। वे कूड़ा उठाकर डस्टबिन में डाल रहे हैं। बच्चे इस अभियान को सफल बनाने के लिए अति उत्साहित हैं। ऐसा हम सबको हर समय करना चाहिए ताकि हमारा देश स्वच्छ हो और लोग स्वस्थ हों।

*** गतिविधि- विप्लव-गायन का चित्र बनाओ।**

बाल–महाभारत
पाठ– 38–40

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 धृतराष्ट्र ने भीम के प्रतिमा के साथ क्या किया?

उत्तर - धृतराष्ट्र ने प्रतिमा को भीम समझकर ज़ोरों से छाती से लगाकर कस लिया और प्रतिमा चूर-चूर हो गई।

प्रश्न-2 युधिष्ठिर स्वंय को दोषी क्यों मान रहे थे और उन्होंने क्या निश्चय किया?

उत्तर – युधिष्ठिर के मन में यह बात समा गई थी कि हमने अपने बंधु-बांधवों को मारकर राज्य पाया है, इससे उनको भारी व्यथा रहने लगी। अंत में उन्होंने वन में जाने का निश्चय किया, ताकि इस पाप का प्रायश्चित हो सके।

प्रश्न-3 धृतराष्ट्र ने भीम की प्रतिमा को ज़ोर से क्यों कस लिया?

उत्तर – वृद्ध राजा ने प्रतिमा को भीम समझकर ज्योंही छाती से लगाया, त्योंही उन्हें याद हो आया कि मेरे कितने ही प्यारे बेटों को इस भीम ने मार डाला है। इस विचार के मन में आते ही धृतराष्ट्र क्षुब्ध हो उठे और उसे ज़ोरों से छाती से लगाकर कस लिया। प्रतिमा चूर-चूर हो गई।

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से अपनी इच्छा के बारे में क्या बताया?

उत्तर – धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा कि वंश की परंपरागत प्रथा के अनुसार वे वल्कल धारण करके वन में जाना चा हते हैं।

प्रश्न-2 युधिष्ठिर से वन में जाने की अनुमति पाकर कौन-कौन वन के लिए रवाना हुए?

उत्तर - युधिष्ठिर से वन में जाने की अनुमति पाकर वृद्ध राजा धृतराष्ट्र, गांधारी और माता कुंती वन के लिए रवाना हुए।

प्रश्न-3 माता कुंती को वन जाते देख युधिष्ठिर क्या बोले?

उत्तर – युधिष्ठिर बोलेमाँ, तुम वन में क्यों जा रही हो? तुम्हारा जाना तो ठीक नहीं है। तुम्ही ने आशीर्वाद देकर युद्ध के लिए भेजा था। अब तुम्हीं हमें छोड़कर वन को जाने लगीं। यह ठीक नहीं है।"

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 बलराम ने समाधि में बैठकर शरीर क्यों त्याग दिया?

उत्तर – वंशनाश देखकर बलराम को असीम शोक हुआ और उन्होंने वहीं समाधि में बैठकर शरीर त्याग दिया।

प्रश्न-2 किस कारण विशाल यदुवंश समाप्त हो गया?

उत्तर – श्रीकृष्ण के सुशासन में यदुवंश ने सुख-समृद्धि को भोगा, परंतु आपसी फूट के कारण अंतत: यह विशाल यदुवंश समाप्त हो गया।

प्रश्न-3 महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद श्रीकृष्ण कितने बरस तक द्वारका में राज्य करते रहे?

उत्तर - महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद श्रीकृष्ण छत्तीस बरस तक द्वारका में राज्य करते रहे।

प्रश्न-4 सब बंधु-बांधवों का सर्वनाश हुआ देखकर श्रीकृष्ण ने क्या किया?

उत्तर – सब बंधु-बांधवों का सर्वनाश हुआ देखकर श्रीकृष्ण भी ध्यानमग्न हो गए और समुद्र के किनारे स्थित वन में अकेले विचरण करते रहे।

प्रश्न-5 पांचों पांडवों ने द्रौपदी को साथ लेकर तीर्थयात्रा करने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर – श्रीकृष्ण के देहावसान का जानकार पांडवों के मन में सांसारिक जीवन के प्रति विराग छा गया। जीवित रहने की चाह अब उनमें न रही। अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राजगद्दी पर बैठाकर पाँचों पांडवों ने द्रौपदी को साथ लेकर तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया।